।। श्री गणेशाय नमः ।।

गणेश पच्चीसी

S1578

दोहा– पच्चीसी गणराज जो प्रथम पूजियत आद।
वर्नन कर निज कर लिखी लाला जुगल प्रसाद।।
श्री सबदल सिंह प्रतीतरा श्रीवास्तव सो प्रधान
तिंह सुत जुगल प्रसाद यह पुस्तक करी बखान
आद भूमि है जैतपुर, हाल जतारा वास
नाम जुगल प्रसाद है, कविता में शिवदास।।

– रचयिता –
जुगल प्रसाद 'शिवदास' श्रीवास्तव (कायस्थ)
सुपुत्र–श्री प्रतीतराय सबदल सिंह जू प्रधान (जैतपुर राज्य)
हाल जतारा जिला टीकमगढ़

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

परम पूज्य पं मन मोहन पाण्डेय से. नि. रजिस्ट्रार के करकमलों में सादर सप्रेम भेंट।

कुंजबिहारी श्रीवास्तव सेवा. प्राचार्य

01578

गणेश पच्चीसी

।। श्री गणेशाय नमः, श्री सरस्वती दैव्यै नमः, श्री गबरीनाथाय नमः ।।

दोहा :— सुमर गजवदन एक रदन सदन सिद्धिसुख देत।
मदन अरी सुत अति प्रबल जन रक्षा के हेत ।।

सवैया :—सोहत सुन्दर रूप अनूप प्रभातः जिमि जग मध्य उजैरो।
भ्राजत भाल सिंदूर से लाल मनोरवि बाल सुमेर, पै हेरौ ।।1 ।।
आनन दिर्व्य मनै शिवदास कहा वरनै तिंह की छवि केरौ।
ध्यावत शेष सुरेश हमेश गनेश कलेश हरौ अब मेरौ ।।2 ।।
तेसर सोहत कंचन छत्र विराज रहौ है प्रकाश घनेरौ।
मध्य लसै नव रंग के रत्न दिवाकर मानो नच्छित्रन घेरौ ।।
हौ गिरजा सुत रूप अवास भनैं शिवदास सु है तुब चैरो।
ध्यावत शेष सुरेश हमेश गनेश कलेश हरौ अब मेरौं ।।3 ।।
सोच गहै निसि वासर मोह तिंहू पर आन के पाप ने पेरौ।
कौन दसा वरनै शिवदास इतै पर रोगन दीन दरेरौ ।।
संकट काटन नाम तुम्हार कियौ यह वेद पुराणन भैरौ।
ध्यावत शेष सुरेश हमेश गनेश कलेश हरौ अब मेरौं ।।4 ।।
पाप पिशाच सौ लागत आन चुरैल सीचिंता करैनित फेरौ।
राकाशशी कौ गृसै जिम राहु मनै शिवदास सो येसो ही घेरौ ।।
कष्ट हरै गिरजा को कुमार विचार हिये तुमको प्रभु टेरौ।
ध्यावत शेष सुरेश हमेश गनेश कलेश हरौ अब मेरौं ।।5 ।।
चारू लसै फरसा कर मध्य विराजत चार भुजी तन तेरौ।
चारूह है मुकतान की माल लखैं अंखियान कौ जात अंधेरौ ।।
जाय सवै दुःख जो शिवदास हिये विचया छवि लेय बसेरौं।
ध्यावत शेष सुरेश हमेश गनेश कलेश हरौ अब मेरौं ।।6 ।।

सोरठा :—पूजा होत प्रधान विघ्न हरत शुभ काज में।
वेद करत तुब गान मेरौ दुःख निवारियौ ।।7 ।।

सवैया :—पहिले पद पूजन रावरे को नाहिं तो बिन काहू को काज सरौ।
अरू दुःख अनेकन दीनन के गिरजा सुत नाम के लेत टरौ ।।
निज कीरत तेरी विचार हिये शिवदास प्रभू तुमकौ सुमरौ।
महिमा जग जाहिर है तुमरी अब मेरौ गनेश कलेश हरौ ।।8 ।।

Scanned with OKEN Scanner

ध्यावौ सबै तिंहके पद पंकज सांचहु शंभु कुमार है ये सहू।।24।।
चारू सरूप विराजत है अरू चारू ललाट पै सैंदुर भ्राजा।
वांकरो देव गजानन है सौ करै तिंह रंक अनेकन राजा।।
सो शिवदास कहां लौं कहैं पै करें इन मेरे सबै मन काजा।
भूधरजासुतजोसुमिरैंतौविशेषहीतासकीराखतलाजा।।25।

दोहा :—यमल अनिल निधि इंदु मैं माहकृष्ण कबवार।
श्री गनेशव्रत दिन लियौ पच्चीसी अवतार।।26।।
सबदल सिंह प्रतीतरा श्रीवास्तव सुप्रधान।
तिंह सुत जुगल प्रसाद यह पुस्तक करी बखान।।27।।
खेरौ अंतर वेद में बनी सो पाराबार।
उत्तम कायस्थ वंश में तिनकौ विमल विचार।।28।।
आद भूमि है जैतपुर हाल जतारा वास।
नाम जुगल प्रसाद है कविता में शिवदास।।29।।
हरी नाम संग्रह प्रथम रचौ ग्रंथ मुदऐन।
तिनहू यह शिव सुअन सौ करी विनय सुख दैन।।30।।
जो नित पाठ सुनावहीं शिवसुत से करहेत।
सकल अरिष्ट निवारि कै मनवांछित फल देत।।31।।
होय मनोरथ सिद्वसब जो जाके मन मांह।
सत्य कहाँ शिवसुत करै या मैं संशय नांह।।32।।
पच्चीसी वरनन करी शिवसुत की सुख दैन।
वांचै सुनै सुनाय है, सो पावै अति चैन।।33।।

<u>प्रकाशक-संपादक</u>

कुंजबिहारी श्रीवास्तव

से. नि. प्राचार्य एवं मोहनलाल खरे से. नि. प्राचार्य
पुत्र— संत सुन्दरलाल श्रीवास्तव पौत्र श्री शिवदयाल
प्रपौत्र श्री जुगल प्रसाद श्रीवास्तव "शिवदास"
पर प्रपौत्र— सबदल सिंह प्रतीतरा जैतपुर राज्य
हाल — संत सदन जतारा

राम सुधा तरंगनी

Scanned with OKEN Scanner

5158

राम सुधा तरंगनी

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वती दैव्यै नमः श्री गबरी नाथायः नमः
अथ श्री राम सुधा तरंगनी लिख्यते।

दोहा :— श्री गणपति को सुमर के गनपति को धर ध्यान।
श्री गणपति करि है। कृपा करत राम गुन गान।।

श्री सरस्वती जू की वन्दनाः—

दोहा :— श्री वाणी ध्यावत बनें कविता अति अभिराम।
वानी वानी में कढै अधिक राम को नाम।।
तुव प्रसाद विन होत नहि कविता कौनहु भांत।
ललित सवैया देहु रंच हेवानी जगमात।।

श्री महादेव जू की वन्दनाः—

सवैया :— गंग तरंग लसै सिर ऊपर संग शिवा अरधंग भवानी।
भंग के रंग उमंग रहै सुच अंग विभूति सदा लिपटानी।।
दीनन को 'शिवदास' कुबेर की सम्पति शंभु के हाथबिकानी।
राम सुधा रस सानी कढ़ै मम वानी भजौ तुम औढ़र दानी।।

दोहा :— कढ़ै राम को नाम अति बढै राम से नेह।
मम यह कविता के विसै शंभु कृपा कर देहु।।

श्री गुरूदेव जू की वंदना

दोहा :— बंदौ गुरू गुरू कृपा ते राम चरन रत होत।
यह भाव सागर तरन कौ गुरू पद पावन पोत।।
नाम दोय वपु एक है गुरू सोई भगवान।
दोनो एक कारज करैं जैसे तीर कमान।।
सुमर राम गुरू नाम जो कहैं सुनै सुख देत।
अव वरनत हों भूमिका जो बरनम को हेत।।

।। अथ भूमिका वर्णन ।।

दोहा :— स्वर्ग नरक परलोक में सुख दुख लोंक मझांर।
मन के कारन ते भिलत बुध जन लेव विचार।।
भले बुरे कामन विसैं जहां लगै मन जाय।
तैसों फल पावत मनुज गश्थन दियौ बताय।।
मन पानी की एक गति जौन चढावौ रंग।
कहत सुकवि हो जात है तौन भांत को अंग।।
पीत रंग तें पीत जल श्याम रंग तैं 'श्याम'।
करें सुसंग कुसंग तें सोई मन को काम।।
जब मन के आधीन है जान परी सब वातं।
मन को रंग वो ठीक है उत्तम रंग में तात।।
कौन रंग उत्त्म कहौ अव यह कियो विचार।
राम रंग सब में सरस यह लीन्हों निरधार।।

Scanned with OKEN Scanner

स्व. श्री सुन्दरलाल (संत जी) पुत्र श्री शिवदयाल श्रीवास्तव

जन्म 7 अगस्त 1912 सवर्गवास 9.11.95

आपका अपना एक मात्र
विश्वसनीय प्रतिष्ठान

शिवा ज्वैलर्स

सदैव आपकी सेवा में तत्पर

मेनमार्केट, जतारा जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)

मो. 9617740404

Scanned with OKEN Scanner